कृति : अनहद गूंज–काव्य संग्रह

कृतिकार : मुनि प्रज्ञा सागर

प्रकाशक : कुन्द–कुन्द संस्कृति न्यास, बागीदौरा–बांसवाड़ाः राज.

प्राप्ति स्थल : कुन्द–कुन्द संस्कृति न्यास, बागीदौरा–बांसवाड़ा : राज. तरूण कांति परिषद, सोनकच्छ : म.प्र.

मूल्य : 5/– रूपये मात्र

पश्चिमी विचारक हार ग्रेव ने लिखा है –तारे आकाश की कविता है और प्रकृति धरती की कविता है तारे और प्रकृति भले ही आकाश और धरती की कविता हो, परन्तु कविता ह्रदय की आवाज है। ह्रदय का स्पन्दन है। अनह्रद की गूंज है।

कविता में लोगों के दिल और दिमाग को झकझोरने की अन्तःकरण को गुदगुदाने की, सुषुप्त चेतना को चेताने की, जगाने की, भटकी मानव जाति को मार्ग सुझाने की, नैतिकता से पतित होती हुई संतति को खबरदातर करने की, और कल्पना की शक्ति को अभिव्यक्ति देने की अद्‌भुत क्षमता है। कविता साहित्य की वह विद्या है, जो कवि को अमरता प्रदान करने हेतु सुधा का काम करती है।

अभी तो कई लोग कविता के मायने भी नहीं स्मझते हैं। लोगों को यह भी ज्ञात नहीं कि कविता क्या है ? क्योंकि जब मैं लोगों से कविता सुनाने के पूर्व पूंछता हूं कि बताईये कविता क्या है ? तो वे लोग आस–पास मुंह ताकते है और कहते हैं मुनिश्री आप ही बतलाईये। तब मैं उनसे कवि धूमिल, के शब्दों में कहता हॅू कविता भाषा में आदमी होने की तमी है।

मैंने भी अपने अस्तित्व को पहचाना और मुनित्व की साधना करते हुए चिन्तन को शब्दों का बाना पहना कर कविता का रूप दिया है।

अनहद्‌ गूंज के प्रथम खंड में मैंने आचार्य समन्तभद्र स्वामी द्वारा रचित स्वयं भू–स्त्रोत के भावों को ग्रहण किया है, जिसमें मुझे आचार्य प्रवर दादा गुरू श्री

विद्यासागरजी महाराज की कृति समन्तभद की भद्रता का भी पूर्ण सहारा मिला है। मैं इन पूज्यवाद आचार्य का ऋणी हूॅ। द्वितीय खण्ड मेरे चिन्तन मनन व अध्ययन का प्रतिफल है।

मुझे इतनी उंचाईयों पर पहुंचाने का श्रेय पूज्यवाद गुरूदेव आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज को है। मेरे निर्माता, मेरे भाग्य विधाता गुरूदेव को नमन–नमन–नमन।।

....

....